मेरे गाँव की सुख और शांति किसने छीन ली?

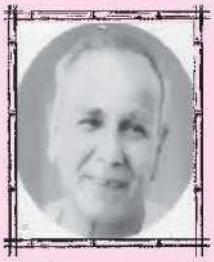

कवि परिचय – 'लोक संस्कृति-पुरुष' के रुप में प्रख्यात, निमाड़ी लोक साहित्य के मर्मज्ञ पण्डित रामनारायण उपाध्याय का जन्म 20 मई सन् 1918 को जिला खण्डवा के कालमुखी नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री सिद्धनाथ एवं माता का नाम दुर्गादेवी था। पत्नी शकुन्तलादेवी की स्मृति में आपने 'लोक संस्कृति' न्यास की स्थापना 27 नवम्बर सन् 1989 को की।

उपाध्याय जी 'मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद-भोपाल' एवं 'राष्ट्रभाषा परिषद्-भोपाल' के संस्थापक सदस्य रहे। 20 जून सन् 2001 ई. को अपनी इहलीला समाप्त कर दिव्य-ज्योति में विलीन हो गए।

पण्डित उपाध्याय जी की प्रकाशित कृतियों की संख्या चालीस से अधिक है, जिनमें प्रमुख रूप से – 'कुंकुम-कलश और आम्रपल्लव', 'हम तो बाबुल तोरे बाग की चिड़िया', 'कथाओं की अन्तर्कथाएँ', 'चतुर चिड़िया' तथा 'निमाड़ का लोक साहित्य और उसका इतिहास' उनकी पुरस्कृत कृतियाँ हैं।

पण्डित रामनारायण उपाध्याय घर के विद्वत वातावरण एवं संस्कृतनिष्ठ संस्कारों के कारण अंग्रेजी-हिन्दी में निरन्तर अध्ययन एवं अध्यवसायरत रहे; फलतः एक विशद जीवन-दृष्टि को आत्मसात् कर सके। ग्राम की माटी की गंध तथा लोक पुरुष की रहनि से युक्त पण्डित उपाध्याय के व्यक्तित्व में एक सच्चे किसान की भावुकता, सहृदयता और क्रियाशीलता समाहित है। इन वैयक्तिक विशेषताओं के दर्शन आपकी रचनाओं में भी सहज ही हो जाते हैं। उपाध्याय जी अपने आस-पास के परिवेश को पूर्णतया हृदयंगम करके ही रचनाकर्म से जुड़ते हैं जिससे आपके रचनाकर्म की पीठिका में लोक-चिन्ता, प्रकृति उपासना जैसे गूढ़ विषयों की व्यापकता समाहित हो सकी है। उनके साहित्य सृजन में सम्पूर्ण निमाड़ी लोक-साहित्य पर समग्र लेखन तो है ही, ललित निबंध, व्यंग्य, रूपक, संस्मरण, रिपोर्ताज और गांधी-साहित्य इत्यादि का वैविध्य भी है। उपाध्याय जी की वाणी, वेश और आचरण-व्यवहार में जहाँ गांधीवादी जीवन और विचार प्रत्यक्ष होते थे; वहीं ग्राम और ग्राम्य-संस्कृति मूर्तिमान होती थी।

केन्द्रीय भाव

रामनारायण उपाध्याय का लोक जीवन से गहरा संपर्क रहा है वे गाँव के लेखक हैं। गाँव उनकी चेतना में रचा-बचा है। भारत गाँवों का देश है। गाँव भारत की आत्मा हैं। आज भी भारत की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी गाँव में निवास करती है।

प्रस्तुत निबंध में गाँव की संस्कृति पर दृष्टिपात किया गया है किंतु निबंधकार गाँव के वर्तमान को लेकर चिंतातुर हैं। गाँव अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। गाँवों की पहचान समाप्त होती जा रही है तो भारतमाता की पहचान के बिन्दु भी धूमिल पड़ रहे हैं।

गांधी और रवीन्द्रनाथ जी ने सहज जीवन के प्रणेता गाँवों को ही आदर्श मानकर शांति निकेतन और 'सेवाग्राम' की स्थापना की थी। गाँव जो अपनी प्राकृतिक जीवन की सदैव परिकल्पना प्रदान करते रहे हैं वे गाँव अब आधुनिकता के दबाब में इस सुख से वंचित हो रहे हैं। लोक-गीतों की धुनें अब गाँव से गायब हैं। वे लोकगीत भी ऐसे जो मानवीय संवेदना से आपूरित थे, लगता है कि लोकगीतों के साथ ही मानवीय संवेदनाएँ चली गई हैं। अपनी आर्थिक व्यवस्था में आत्मनिर्भर गाँवों की आर्थिक स्थिति छिन्न-भिन्न हो चुकी है। गाँवों से निरंतर मजदूरों का पलायन हो रहा है। गाँवों का शिल्प और उसके शिल्पकार अब उदास हो गए हैं। गाँवों की वन्य प्रकृति नष्ट की जा रही है। पहले गाँवों का आदमी निरक्षर जरूर था किंतु वह सुसंस्कृत था। उसमें आस्था और विश्वास जैसे भाव कूट-कूटकर भरे थे, वह श्रम और संघर्ष का पक्षधर था। वह सामाजिक समरसता में जीता था। गाँव अपनी इन विशेषताओं के कारण ही तो गाँव था। उसका इतिहास उसकी लोक-कथाओं और उसकी लोक कहावतों में जीवित था। आज गाँव अपना रूप बदल चुके हैं। अब गाँव में अशांति है। गाँव में बेरोजगारी है गाँव में नीरसता है गाँव गरीब हैं। लेखक ने निबंध के अंत में अपना विश्वास जताया है कि परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता है, किंतु इस परिवर्तन में हमें अपनी लोक चेतना के विभिन्न आयामों को जीवित और जागृत करने का भी जतन करना होगा। निबंध की भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली है। भाषा की सादगी की प्रभाव क्षमता इस निबंध में देखने को मिलती है।

मेरे गाँव की सुख और शांति किसने छीन ली?

जिन गाँवों ने हिन्दी साहित्य को 'होरी' और 'गोबर' जैसे पात्र दिए, जिन गाँवों के लिए गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शहरों की समस्त सुविधाओं को त्यागकर 'शान्ति निकेतन' और 'सेवाग्राम' को अपना कार्यस्थल बनाया, जिन गाँवों में रहने के लिए साधारण नागरिक ही नहीं कवियों का मन भी ललचाया था, वे ही गाँव आज अशान्ति के घर हुए जा रहे हैं; और जैसे किसी भी आँख से आँसू गिरे ऐसे गाँवों के आँचल से एक-एक घर टूटते ही चले जा रहे हैं।

यही सब देखकर पूछने को जी चाहता है कि आखिर मेरे गाँवों की सुख और शांति को किसने छीन लिया ? मेरे गाँवों की अन्न-धन और लक्ष्मी कहाँ चली गई ? किसान के कंठ से गीत कहाँ लुप्त हो गए ? तीज-त्यौहार की मस्ती किसने चुरा ली ?

जिन गाँवों में लोक संस्कृति का जन्म हुआ, जिसने लोक की जीवन्त रसधारा को, अपने हृदय में सुरक्षित रखा, वे ही गाँव आज टूटते जा रहे हैं गाँव की वह पुरानी पीढ़ी भी समाप्त होती जा रही है जिसका सम्पूर्ण जीवन श्वास-प्रश्वास की तरह गीतों के ताने-बाने पर आधारित था। अब तो वे गोकुल से सहज-सरल गाँव नष्ट होते जा रहे हैं, जहाँ स्त्रियाँ भोर में उठकर आटे के साथ घने अँधेरे को भी पीसकर सुहावने प्रभात में बदल देती थी। जहाँ चक्की के हर फेरे के साथ गीत की नई पंक्तियाँ उठती थीं। लगता था जैसे श्रम में से संगीत का जन्म हो रहा हो और संगीत लोरी बनकर श्रम को हल्का करने में अपना योगदान दे रहा हो। ऐसे में गीत के बोल चलते-निर्मल चाँदनी रात फैली हुई है तारे का उदय कब होगा? "तारे का उदय तो पिछली रात में होगा, जब पड़ोसिन जाग जाएगी और दही बिलोने की आवाज के साथ चक्की का स्वर गूँजेगा।" अब गाँव में कोई मजदूर यह गाते हुए नहीं मिलेगा कि 'हे धरती माता अपने हृदय को जरा नरम बना लो ताकि कुदाली चलाने वाले मेरे पिया के हाथ में छाले न पड़ जाएँ', अब कोई किसान हल की मूठ के साथ यह गाता नजर नहीं आएगा कि 'हे सूरज तुम धीरे-धीरे तपो ताकि मेरी स्त्री के सिर पर उगा हुआ कुमकुम का दूसरा सूरज पिघल न जाए। फ्लोर मिल के साथ चक्की के गीत समाप्त होते जा रहें हैं- और ट्रेक्टर के साथ हल के गीतों का लोप होता जा रहा है।

पहले जो आदमी गाँव का समृद्ध किसान माना जाता था, वही अब बढ़ती मँहगाई और शोषणकारी समाज व्यवस्था के चलते अपनी जमीन से हाथ धोकर खेतिहर मजदूर में बदलता जा रहा है और सचमुच मजदूर था वह जमीन पर से किसान का आधिपत्य कम हो जाने से शहरों में मजदूरी करता नजर आता है।

गाँवों में कुम्हार तो हैं लेकिन उस कुम्हारी के धंधे का लोप हो चुका है, जिसकी हथेली स्पर्श पाकर माटी नए-नए रूप धरती थी। वह कभी गागर बनकर पनिहारिन के सिर पर इठलाती, कभी खपरैल बनकर झोपड़ी की माँग सँवारती। तो कभी नन्हें से माटी के दीप की छौनी अँगुली बन कर आशा की किरण जगा जाती थी। गाँव में तेल निकालने वाले तो हैं लेकिन तिल में अब इतना तेल नहीं रहा जो उसकी सूखी हड्डियों को स्निग्धता प्रदान कर सके। गाँव का जो सुतार पहले लकड़ी की गाड़ियाँ बनाकर ग्राम लक्ष्मी को खेतों से घर लाने में सहायता पहुँचाता था, अंधे की लाठी की तरह उसकी उसी लकड़ी का ठेकेदारों के द्वारा अपहरण कर लिए जाने से स्वयं उसका जीवन धुरीहीन हो गया है।

अमराई में अब कोयल नहीं कूकती वरन् ठेकेदारों के नौकर चीखते हैं। जंगलों में अब आदिवासी जन की वंशियाँ नहीं बजती। जिस कला और संस्कृति से आदमी ऊर्जा पाता आया था वह सब संग्रहालय में रखने की वस्तु बनती जा रही है; और लोकगीतों के स्वर गलों से लुप्त होकर 'टेप' में कैद किए जा रहे हैं।

ललित कलाओं का स्वभाव फूल की तरह होता है। वे अपनी जमीन पर अपने मन से खिलती और बढ़ती आई हैं। लोक साहित्य का कार्य महज लोकगीत, लोककथाओं और लोक कहावतों के संकलन का कार्य नहीं है वरन् यह जो

अनादि काल से अनंत काल तक मानव की जीवन यात्रा चली आ रही है, उसमें वह कहाँ गिरा, कहाँ उठा और कहाँ आगे बढ़ा, इस सबकी खोज शोध और अध्ययन का कार्य है।

गाँव का आदमी निरक्षर भले हो, लेकिन सुसंस्कृत रहा है। वह विश्वास पर बिक जाता है, धर्म पर झुक जाता है, सबको सहता है पर शिकायत नहीं करता, सबकी सुनता है पर अपनी ओर से कुछ नहीं कहता। वह कभी थक कर नहीं बैठता, झुक कर नहीं चलता और त्याग में से प्राप्ति तथा परिश्रम में से आनन्द पाता आया है। दुख का पहाड़ आ जाए तो सुख की क्षीण रेखा वह सदा मुस्कुराता है और अकेला रह जाने पर भी अपनी राह चलना नहीं छोड़ता। विभिन्न जातियों, मतों और वर्गों में बँटे होने पर भी वह समूचे गाँव को एक परिवार मानता आया है।

गाँवों का आदमी जाने कब से बाट जोह रहा है कि कोई आए और उससे भी कुछ ले जाए। उसका समग्र जीवन एक अनपढ़ी खुली पुस्तक की तरह सामने बिछा है। उनका रहन-सहन, खान-पान, वस्त्राभूषण, आचार-विचार, रीति-रिवाज, विश्वास और मान्यताएँ, गीत और कथाएँ, नृत्य, संगीत और कलाएँ हमें कुछ न कुछ देने की क्षमता रखते हैं।

बदलते हुए समय में लोक संस्कृति के बदलते हुए रूप से इन्कार नहीं किया जा सकता । लोक साहित्य में युग के अनुकूल अपने को ढालने की और नया युग का मार्गदर्शन करने की अपूर्ण क्षमता होती है। चुनौती के सामने सिर झुकाना लोक का स्वभाव नहीं है। लोक की गंगा तो युग-युग से प्रवाहमान रही है।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. गांधी द्वारा स्थापित आश्रम का नाम लिखिए।
2. लोक संस्कृति का जन्म कहाँ हुआ?
3. लेखक ने संगीत का जन्म किससे माना है ?
4. ललित कलाओं का स्वभाव कैसा होता है ?
5. ग्रामीण समूचे गाँव को किस रूप में मानता आया है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. लेखक समाज से किन प्रश्नों को पूछना चाहता है ?
2. लोक की जीवन्त रस-धारा को किसने, कहाँ सुरक्षित रखा है ?
3. अंधेरे को सुहावने प्रभात में कौन, कैसे परिवर्तित करता है ?
4. गाँव के समृद्ध किसान की स्थिति अब कैसी हो गई है ?
5. श्रम से किसका जन्म होना प्रतीत हो रहा है?
6. माटी कुम्हार की हथेली के स्पर्श से किन नवीन रूपों को धारण कर रही है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. ललित कलाओं का ग्राम्य-जीवन में क्या महत्व था ?
2. लोक गीत ग्रामीण जीवन में किस प्रकार रचे-बसे थे ?
3. लेखक के अनुसार ''गोकुल के सहज-सरल गाँव'' का आशय स्पष्ट कीजिए ?
4. गाँव के सुसंस्कृत आदमी की पाँच विशेषताएँ लिखिए ।
5. गाँव के कुटीर उद्योगों पर आधुनिकता का क्या प्रभाव पड़ा है ?
6. गाँव का आदमी अपने समग्र जीवन से क्या-क्या देने की क्षमता रखता है ?

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए और नाम लिखिए-
   रवीन्द्र, निरक्षर, संग्रहालय, सज्जन
2. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए -
   कार्यस्थल, रसधारा, श्वास-प्रश्वास, लोक संस्कृति
3. निम्नलिखित शब्दों की सन्धि कीजिए -
   पर + उपकार, देव + ऋषि, अति + आचार, प्रति + एक
4. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -
   1. ठेका लेने वाला -
   2. खेती करने वाला -
   3. मिट्टी के बर्तन बनाने वाला -
   4. पानी भरने वाली -
5. निम्नलिखित वाक्यों को पहचानकर अर्थ के आधार पर वाक्य प्रकार का नाम लिखिए -
   1. किसान के कंठ से गीत कहाँ लुप्त हो गए ?
   2. गाँवों में लोक संस्कृति का जन्म हुआ।
   3. मेरे गाँव की शांति मत छीनो ।
   4. निर्मल चाँदनी, रात को नहीं फैली थी ।
   5. मैं चाहता हूँ कि आप एक बार गाँव अवश्य जाएँ।

योग्यता विस्तार

1. किसी एक गाँव में जाइए और वहाँ के लोक-जीवन की विशेषताओं को अपनी डायरी में लिखिए।
2. ''बदलते परिवेश में ग्रामीण संस्कृति लुप्त हो रही है'' इस पर अपने विचार 150 शब्दों में लिखिए।
3. ''आधुनिकता का प्रभाव, प्रकृति और मानवीय संबंधों के संतुलन का विनाशक है'' इस विषय के पक्ष-विपक्ष में तर्क दीजिए।
4. गाँवों में कुटीर उद्योग समाप्ति की कगार पर खड़े हैं ऐसे में आप कुटीर उद्योग और औद्योगिक विकास के संतुलन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
5. गाँव में खेतों तथा अन्य लघु उद्योगों में प्रयोग किए जाने वाले औजारों की सूची बनाइए।

शब्दार्थ

लोक संस्कृति = गाँव की संस्कृति। **जीवन्त** = जीवित, प्रामाणिक। **श्वास-प्रश्वास** = साँस लेना और छोड़ना। **शोषणकारी** = सताने वाला, अनुचित लाभ लेने वाला। **खेतिहर** = मजदूरी से खेत पर कार्य करने वाला। **आधिपत्य** = स्वामित्व, अधिकार। **धुरीहीन** = आधार हीन। **अनादि** = आदि रहित। **प्रवाहमान** = गतिशील, निरन्तर चलता हुआ।